रवीन्द्रनाथ मिश्र

मुक्ति की छटपटाहट[1]

शिवमूर्ति के कथा-साहित्य में प्रेमचंद के लेखन की खुशबू सब जगह मौजूद है, जिसमें अवध के पूर्वांचल की संपूर्ण ग्रामीण संस्कृति भभक उठी है। प्रथम कहानी-संग्रह 'केशरकस्तूरी' से ही शिवमूर्ति ने कथा-साहित्य में अपनी अलग पहचान बना ली। 'त्रिशूल' के बाद 'तर्पण' इनका मात्र एक सौ सोलह पृष्ठों का दूसरा लघु उपन्यास है। लेखक ने इसमें परंपरागत एवं परिवर्तित समाज की मानसिकता को बड़ी खूबी से संवेदनात्मक ढंग से उभारा है। उपन्यास की कहानी उच्च और निम्न वर्ग के लोगों के बीच अपने-अपने वजूद को लेकर है। बड़गांव में चार घर बामनों, दस घर ठाकुरों के साथ पंद्रह-सोलह घर चमारों के हैं। 'तर्पण' की पूरी कथा बमनौटी के धरमू पंडित और चमरौटी के पियारे चमार के बीच संघर्ष की है। जहां एक ओर धरमू पंडित अपने उच्चकुलीन संस्कारों, मान-सम्मान, बड़प्पन, चमार को पांव की जूती आदि समझने की मानसिकता से ग्रस्त है तो दूसरी ओर पियारे हरिजन पुराने और नए संस्कारों से जूझते हुए, हरिजन एक्ट, बहुजन समाज पार्टी के विचारों से प्रभावित बदले की भावना से संचालित है।

उसकी इज्जत बचती है, पर इस प्रसंग को लेकर गांव में महाभारत आरंभ हो जाता है। बमरौटी के नयी विचारधारा से प्रभावित नौजवान और तथाकथित उच्च वर्ग के युवक संघर्षरत हो जाते हैं। कुछ अन्य स्वार्थी तत्त्व जलती आग में अपनी रोटी सेंकने में लग जाते हैं।

इस कथा के माध्यम से लेखक ने सदियों से चले आ रहे दलित समाज की व्यथा को तो चित्रित किया ही है, साथ ही परिवर्तित युवा समाज की मानसिकता को भी दर्शाया है। बहुजन समाज पार्टी आदि का उल्लेख कर दलित समाज में इस छोटी-सी घटना के माध्यम से शिवमूर्ति ने गांव के खेत-खलिहान, कोर्ट-कचहरी, गुटबंदी, चोरी-छिनारा, जाति-पांति, पुलिस-भ्रष्टाचार, मजदूर जीवन की पीड़ा आदि से सनी हुई लोकजीवन की संस्कृति का चित्रण किया है। नारी और दलित विमर्श के संदर्भ में इस उपन्यास की प्रासंगिकता और भी बढ़ जाती है। इसमें परिवर्तित दलित समाज की मानसिकता को लेखक ने जोरदार ढंग से प्रस्तुत किया है। इसके साथ ही नई और पुरानी पीढ़ियों के विचारों को भी सशक्त अभिव्यक्ति मिली है। जहां एक तरफ गांव के बड़े-बूढ़े लोग परंपरा एवं समझौतावादी नीति के पालन का संदेश देते हैं, वहीं दूसरी तरफ युवा वर्ग अन्याय और अत्याचार के खिलाफ विरोध दर्ज कर विद्रोह का समर्थन करता है।

भाषा की सरलता, बोधगम्यता और नाटकीयता से संपूर्ण उपन्यास रोचक बन पड़ा है। लेखक ने हरे-भरे खेतों और लोक-जीवन की संस्कृति का अद्‌भुत बिंब खींचा है। सूरज भगवान लाली फेंककर डूबने जा रहे हैं। एक तरफ बुलबुल गन्ने की सरसराती झूमती फसल, दूसरी तरफ पीली-पीली फूली लाही (अगैती सरसों) का विस्तार। बीच के खेत में बित्ते-बित्ते भर के सिर हिलाते मटर के पोल्ले। (पृ. 8) यह उपन्यास आंचलिकता की कसौटी पर भी खरा उतरता है। भारतीय समाज में दलित वर्ग को नई करवट लेते हुए दिखाया गया है। इसमें लोकजीवन और प्रकृति का संपूर्ण परिदृश्य जीवंत हो उठा है।

---

1. तर्पण : शिवमूर्ति, प्र. राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., 1-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली-1, प्र.सं. 2004।